# तिलहनी व दलहनी फसलों में खरपतवारों की रोकथाम

डा० समुन्द्र सिंह व डा० सतबीर सिंह पुनियां,
सस्य विज्ञान विभाग, चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार– 125 004

हरियाणा में मुख्यतः तोरिया, राया, तारामीरा व सूरजमुखी, गोभी, सरसों, तेल बीज वाली फसल उगाई जाती है। गेहूँ के मुकाबले इन फसलों में खाद व पानी की मात्रा कम लगती है। इन फसलों में अच्छी किस्म का चुनाव, कीड़े–मकौड़े, बीमारियों व खरपतवार पर समय पर नियन्त्रण करना बहुत जरूरी है।

## मुख्य खरपतवार व उनसे ग्रसित फसलें

अगर तोरिया की काश्त अगस्त के आखिरी सप्ताह व 15 सितम्बर तक की जाती है तो सांठी (ईटसिट), मकड़ा, चिड़ियों का दाना, डीला, चोलाई व तांदला खरपतवार उगते हैं। परन्तु अगर तोरिया की काश्त 15 सितम्बर के बाद की जाये तो मोथा (डीला), सैंजी, मेथी, बाथु, हिरणखुरी, कनकी व जई खरपतवार पाये जाते हैं।

## राया व सरसों

हरियाणा प्रान्त में सरसों दो हालात में बोई जाती है। पहली सावनी में खेत खाली छोड़कर वर्षा का पानी संचय करके सितम्बर मास के आखिरी या अक्तूबर के पहले सप्ताह तक बिजाई बारानी हालात में ही की जाती है। दूसरी – बाजरा, मूंग, नरमा की कटाई के बाद खेत में पलेवा करने के बाद बिजाई करना। पछेती बिजाई में बाथू, रबड़ बाथु, मैणी, सैंजीं व गजरी खरपतवार ज्यादा उगते हैं। प्याजी, बाथु, रबड़ बाथु, प्याजी, पीतपापड़ा, मेंथा, मैणी, असली सरसों, हिरणखुरी, जंगली जई व कनकी (गुल्ली डण्डा) आदि सरसों के मुख्य खरपतवार हैं। लोहारू, बाढड़ा, बावल, रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, सतनाली, ईसरवाल, जूई, बहल इलाकों में रेत के टिब्बों पर सरसों की खेती की जाती है। इन इलाकों में नया खरपतवार रुखड़ी या मरगोजा आने लग गया है।

## रोकथाम

तोरिया व राया की फसल में खरपतवारों की (60–70 प्रतिशत) रोकथाम खरपतवारनाशी के प्रयोग से सम्भव है। परन्तु यह खरपतवारनाशी केवल उसी हालात में काम करते हैं यदि जमीन की ऊपरी सतह में नमी की मात्रा अच्छी हो। इसलिए बारानी बोई गई फसल में इन खरपतवारनाशकों के प्रयोग से कम फायदा मिलता है।

तोरिया व राया की फसल में बिजाई से पहले ट्रैफलान दवाई की 800 ग्राम मात्रा या बिजाई के तुरन्त बाद (2–3 दिन के अन्दर) 1.25 लीटर स्टॉम्प प्रति एकड़ के हिसाब से 300 लीटर पानी

में छिड़काव करें। खेत में जब आखिरी जुताई की जाये तो ट्रैफलान की सिफारिश की गई मात्रा को पानी में घोल कर छिड़काव करें व तुरन्त सुहागा लगा दें। कोशिश करें कि छिड़काव सुबह–शाम ही हो क्योंकि यह दवाई धूप में उड़ जाती है। इन दवाइयों के प्रयोग से सांठी (इटसिट),कनकी, बाथु, मेथा आदि पर पूरी तरह नियन्त्रण संभव है। प्याजी (कलरगंठा) व मरगोजा खरपतवार का कोई भी रासायनिक नियन्त्रण सम्भव नहीं है। इनके नियन्त्रण हेतु बिजाई के 3 सप्ताह बाद पहली गोड़ी व 5 सप्ताह बाद दूसरी गोड़ी कसौले या खुरपे से करें। पिछले कई सालों से पहले पानी के बाद सरसों की फसल में कनकी सिट्टी घास/गुल्ली डण्डा व जंगली जई खरपतवारों की समस्या देखने को मिल रही है। ऐसी अवस्था में आइसोप्रोट्यूरॉन की 400 ग्राम मात्रा को 200–250 लीटर पानी में मिल कर सिंचाई से पहले या बिजाई के 45–50 दिन बाद स्प्रे करें। इस खरपतवारनाशी का स्प्रे करने से एक बार फसल को थोड़ा छटका जरूर लगता है परन्तु जंगली जई व कनकी का नियन्त्रण अच्छा हो जाता है।

मरगोजा/रूखडी/ओरोबैंकी का कोई भी रासायनिक व सस्य क्रियाओं द्वारा नियन्त्रण सम्भव नहीं है। जिस खेत में यह खरपतवार देखने को मिले उस खेत में अगले वर्ष सरसों की बजाए चना, गेहूं या जौ की काश्त करनी चाहिए। अगर सम्भव हो तो सरसों की फसल में नहर या टयूबवैल का पानी खुले नाके से लगांए, जिससे खेत में नमी नीचे तक चली जाए।

## गोभी सरसों

इस फसल में खरपतवार नियन्त्रण हेतु तोरिया व सरसों में बताये गये तरीकों की सिफारिश की जाती है। इसके अलावा गोभी सरसों की जी.एस.एल.–2 किस्म पर 320 ग्राम एट्राजिन प्रति एकड़ के हिसाब से उगने से पहले छिड़काव किया जा सकता है। याद रहे कि एट्राजिन का छिड़काव केवल जी.एस.एल–2 किस्म पर ही करें क्योंकि यह किस्म एट्राजीन के प्रति सहनशील है।

## सूरजमुखी

हरियाणा प्रान्त में सूरजमुखी की काश्त आमतौर पर आलू या गन्ने के बाद ही की जाती है। इसलिए इस फसल में खरपतवारों की समस्या कम ही देखने को मिलती है। दूब, मोथा, बाथू, मकड़ा व सांठी (इटसिट) ही सूरजमुखी के मुख्य खरपतवार हैं।

## रोकथाम

पहली गुड़ाई; बिजाई के 3–4 सप्ताह बाद कर दें। अगर जरूरत पड़े तो दूसरी गोड़ाई पहले पानी के बाद करें।

## दाल वाली फसलें

हरियाणा में दाल वाली फसलों में मुख्यतः चना, मटर व मसरी ही उगाई जाती हैं। मसरी प्रदेश के उत्तरी पूर्व जिलों जैसे कि अम्बाला, यमुनानगर व कुरुक्षेत्र में धान के बाद सिंचित अवस्था में उगाई जाती है। परन्तु चना प्रदेश के दक्षिणी पश्चिमी क्षेत्रों में ज्यादातर बारानी हालात में ही उगाया जाता है।

## चने के मुख्य खरपतवार

प्याजी, बाथु, कृष्णनील, मेथा, हिरणखुरी, दूधी, गजरी व पीतपापड़ा।

## मटर व मसरी के मुख्य खरपतवार :

कनकी, जई, पीतपापड़ा, कृष्णनील, बाथु, मेथा, मैणी व हिरणखुरी।

## रोकथाम

1. इन सभी दाल वाली फसलों में पहली दो निराई–गुड़ाई, पहली बिजाई के चार सप्ताह बाद और दूसरी गोड़ाई इसके चार सप्ताह बाद करने से खरपतवारों को पूरी तरह नियन्त्रित किया जा सकता है।
2. बिजाई से पहले ट्रेफलान 48 ई.सी. की 800 ग्राम मात्रा या बिजाई के बाद स्टाम्प 1.25 लीटर या एफालान (लिनोरॉन) 600 ग्राम प्रति एकड़ के हिसाब से छिड़काव करने से 70 प्रतिशत खरपतवारों की रोकथाम हो जाती है।
3. पलेवा करने के बाद धान वाले खेत में अगर चना, मसरी व मटर की काश्त की जाये तो कनकी (गुल्ली डण्डा) की समस्या ज्यादा आती है। उस हालत में टोपिक 15 डब्ल्यू.पी. की 160 ग्राम मात्रा या प्युमा सुपर की 480 ग्राम मात्रा प्रति एकड़ 250 लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे करने से भरपूर नियन्त्रण मिलता है तथा चने व मसरी की फसल को कोई नुकसान नहीं होता।